पाठ 1

जागो जीवन के प्रभात

(प्रस्तुत कविता एक जागरण गीत है। इसमें अज्ञान और अन्धकार को मिटाकर कार्य करने की प्रेरणा दी गयी है।)

अब जागो जीवन के प्रभात!

वसुधा पर ओस बने बिखरे

हिमकन आँसू जो क्षोभ-भरे

उषा बटोरती अरुण गात।

अब जागो जीवन के प्रभात !

तम-नयनों की ताराएँ सब

मुँद रही किरण दल में हैं अब

चल रहा सुखद यह मलय-वात

अब जागो जीवन के प्रभात!

रजनी की लाज समेटो तो

कलरव से उठ कर भेंटो तो,

अरुणांचल में चल रही बात

अब जागो जीवन के प्रभात !

- जयशंकर प्रसाद

हिन्दी छायावादी युग के प्रमुख साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी सन् 1889 ई0 को वाराणसी में हुआ था। प्रसाद जी की स्कूली शिक्षा कक्षा 8 तक ही हुई थी, परन्तु घर पर रहकर इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन किया। पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही इन्होंने काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। प्रसाद जी श्रेष्ठ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं: 'लहर', 'झरना', 'आँसू', 'प्रेम पथिक', 'कानन-कुसुम', 'कामायनी' (महाकाव्य)। इनका निधन 14 जनवरी सन् 1937 ई0 को हो गया।

शब्दार्थ

प्रभात = सवेरा (चेतना और जागरण के लिए कविता में प्रयुक्त है)। वसुधा = पृथ्वी। हिमकन = बर्फ के कण, ओस। क्षोभ = दु:ख। अरुण गात = लालिमायुक्त शरीर। तम-

नयनों की ताराएं = अन्धकार के नेत्र रूपी तारे। किरण-दल = किरणों का समूह। मलय-वात = शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा। रजनी = रात। कलरव = पक्षियों का चहचहाना (कविता में इसे जागरण के अर्थ में लिया गया है)। अरुणांचल = पूर्वदिशा। चल रही बात = चर्चा हो रही है।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(i) सुबह सूर्योदय से थोड़ा पहले अपने घर के बाहर अथवा छत पर खड़े होकर पूर्व दिशा के एक-एक दृश्य को बारीकी से देखिए और -

(क) देखे गये दृश्यों के बारे में अपनी पुस्तिका में लिखिए।

(ख) देखे गये दृश्यों का चित्र बनाइए।

(ii) प्रातः काल वर्णन संबंधी कम से कम दो कविताओं का संकलन कीजिए।

विचार और कल्पना

1. यह कविता उस समय लिखी गई थी जब देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था। हम गुलामी के अंधकार से आजादी के सुनहरे सवेरे की ओर बढ़ रहे थे। बताइए, उस समय देश की स्थिति क्या रही होगी ?

2. प्रातः काल पशुपालक अपने पशुओं को चारा खिलाते हैं। इसी तरह निम्नांकित के द्वारा प्रातः काल किये जाने वाले कार्यों के विषय में लिखिए-

(क) विद्यार्थी

(ख) माँ

(ग) दुकानदार

(घ) पक्षी

(ङ) आप

कविता से

1. कविता में जीवन का जो सन्देश छिपा हुआ है, दिये गये विकल्पों में से उसे छाँटिए-

(क) सूर्योदय के लिए।

(ख) जीवन में नयी आशा का संचार करने के लिए।

(ग) मलय-वात का आनन्द लेने के लिए।

2. कवि ने प्रातः काल पृथ्वी पर फैले ओस कणों को क्या कहा है ?

3. उषा द्वारा ओस बटोरने का क्या आशय है ?

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात।

(ख) कलरव से उठकर भेंटो तो।

5. 'रजनी की लाज' को स्पष्ट करने के लिए नीचे चार अर्थ दिये गये हैं, इनमें से सही अर्थ छाँटकर लिखिए-

(क) अन्धकार (ख) शर्म

(ग) दुःख (घ) आलस्य

भाषा की बात

कविता की दो पंक्तियों को पढ़िए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात

(ख) अरुणांचल में चल रही बात

उपर्युक्त पंक्तियों में आए शब्द 'वात' और 'बात' का अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

अर्थ वाक्य प्रयोग

वात ....

बात ....

(ग) अरुण+अंचल के योग से 'अरुणांचल' शब्द बना है। इसी तरह नीचे लिखे गये शब्दों में 'अंचल' शब्द जोड़कर लिखिए-

हिम, उत्तर, पूर्व, सोन, कोयला, नीला।

पढ़ने के लिए

देश हमें देता है सब कुछ,

हम भी तो कुछ देना सीखें,

सूरज हमें रोशनी देता,

हवा नया जीवन देती है

भूख मिटाने को हम सबको,

धरती पर होती खेती है।

औरों का भी हित हो जिसमें

हम ऐसा कुछ करना सीखें।

पथिकों को जलती दोपहर में

पेड़ सदा देते हैं छाया

खुशबू भरे फूल देते हैं

हमको नव फूलों की माला

त्यागी तरुओं के जीवन से

हम भी तो कुछ जीना सीखें।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ

जो चुप हैं उनको वाणी दें

जो पिछड़ा है उसे बढ़ाएँ

प्यासी मिट्टी को पानी दें।

हम मेहनत के दीप जलाकर

नया उजाला करना सीखें।

-गोपालकृष्ण कौल

शिक्षण संकेत

ऊपर लिखी गई कविता का छात्रों से वाचन कराएँ।

इसे भी जानें-

‘जय जवान जय किसान’ का नारा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने दिया था।